

## जलवायु परिवर्तन का असर- उत्तराखण्ड में समय से पहले खलिते लगे फूल, रंग और गंध में भी अंतर

### चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं कृषेत्रीय प्रभारी डॉ. एस.के. सहि ने बताया कि उत्तराखण्ड में जलवायु परिवर्तन के कारण न सिर्फ फूल निर्धारित समय से पहले खलिते लगे हैं, बल्कि उनके रंगों में भी बदलाव देखने को मलि रहा है।

### प्रमुख बढि

- भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण के वैज्ञानिकों के अनुसार पूरी दुनिया में साढ़े 4 लाख ऐसी वनस्पतियाँ पाई जाती हैं, जनिमें फूल खलिते हैं। इनमें से 40,000 प्रजातियों की वनस्पतियाँ भारत में पाई जाती हैं। 20 हज़ार प्रजातियाँ ऐसी हैं, जनिमें तय समय पर फूल खलिते हैं। नश्चिति तापमान और वातावरण में ही फूलों के खलिते की प्रक्रिया शुरू होती है।
- कुछ फूल ऐसे हैं, जो ऋतुओं के आने का संकेत देते हैं, लेकिन अब जलवायु परिवर्तन से फूलों के खलिते के समय में भी बदलाव देखने को मलि रहा है।
- डॉ. एस.के. सहि के मुताबकि राज्य के उच्च हिमालयी कृषेत्रों में पाया जाने वाला राज्य पुष्प ब्रह्म कमल भी अब निर्धारित समय से पहले खलिते लगा है। वहीं फूलों की घाटी में भी समय से पहले फूल खलिते की बातें सामने आ रही हैं।
- जलवायु परिवर्तन और तापमान में बढोतरी से अब फूलों के रंगों में भी बदलाव देखने को मलि रहा है। अमेरिकन साइंस जर्नल करेंट बायोलॉजी में प्रकाशित एक लेख के मुताबकि, फूलों के पगिमेंट में भी रासायनिक बदलाव देखने को मलि रहा है। पगिमेंट ही पराबैंगनी करिणों को अवशोषित करता है। पराबैंगनी करिणों का सबसे अधिक असर उच्च हिमालयी कृषेत्रों के फूलों पर देखने को मलि रहा है।
- शोध में यह बात भी सामने आई कि अत्यधिक कार्बन उत्सर्जन से ओज़ोन परत के कृषरण और अधिक अल्ट्रावायलेट करिणों के धरती पर आने से फूलों के परागकणों पर भी असर पड़ा है। यह भी फूलों के खलिते के समय और रंगों में बदलाव का एक कारण रहा है।